Faizane Mufti e Azame Hind رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

हफ़्तावार रिसाला : 463
Weekly Booklet : 463

फ़ैज़ाने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़हात : 26

पैदाइशी वली (04) बयान रुकवा कर तौबा करवाई (17)

मालूमाती फ़तवा (20)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

फ़ैज़ाने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 26 सफ़हात का रिसाला "फ़ैज़ाने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द" पढ़ या सुन ले उसे औलियाए किराम की सच्ची महब्बत दे कर उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उस से हमेशा हमेशा के लिए राज़ी हो जा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ो क्यूंकि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ पर पेश किया जाता है। (معجم اوسط، 1/84، حدیث:241)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुरूदे पाक के बारे में तह़क़ीक़े रज़ा

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह साबित व वाज़ेह़ है कि हुज़ूर जाने रह़मत (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाहे अक़्दस में दुरूदो सलाम और आमाले उम्मत की पेशी बार बार होती है और अह़ादीस की जम्अ़ व तरतीब से मेरे लिए येह ज़ाहिर हुवा कि हर दुरूदे पाक बारगाहे रिसालत (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में दस बार पेश होता है और दीगर आमाल पांच बार पेश होते हैं, दरबारे नुबुव्वत में दुरूद पेश होने के चन्द त़रीक़े येह हैं : ﴾1﴿ तुर्बते अत़्हर (यानी क़ब्रे मुनव्वर) के पास एक फ़रिश्ता पहुंचाता है। ﴾2﴿ वोह फ़रिश्ता पेश करता है जो दुरूद पढ़ने वाले के साथ मामूर व मुअक्कल (यानी मुक़र्रर) है। ﴾3﴿ सैरो सियाह़त करने वाले फ़रिश्ते पहुंचाते हैं। ﴾4﴿ ह़िफ़ाज़त करने

वाले फ़रिश्ते दुरूदे पाक को दिन के तमाम आमाल के साथ शाम को और रात के आमाल के साथ सुब्ह को पेश करते हैं। ﴾5﴿ हफ़्ता भर के आमाल के साथ दुरूद शरीफ़ जुमुआ के दिन पेश होता है। ﴾6﴿ (उम्र भर के तमाम) दुरूद क़ियामत के दिन पेश होंगे। (चन्द बार जो पेश हो चुके वोह मक़ामात येह हैं :) ﴾7﴿ मेराज की रात आमाल पेश हुए। ﴾8﴿ हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने नमाज़े कुसूफ़ (यानी सूरज गहन की नमाज़) में देखे। ﴾9﴿ अल्लाह पाक ने जब हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दोनों कन्धों के दरमियान दस्ते क़ुदरत रखा तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर हर चीज़ रौशन (यानी ज़ाहिर) हो गई। ﴾10﴿ क़ुरआने करीम के नाज़िल होने के वक़्त तमाम अश्या के उ़लूम व मआ़रिफ़ ह़ासिल हुए। (انباءُ الحی، ص287)

अल्लाह अल्लाह तबह़्हुरे इ़ल्मी अब भी बाक़ी है ख़िदमते क़लमी
अहले सुन्नत का है जो सर्माया वाह क्या बात आला ह़ज़रत की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

किसी का दिल न टूटे (वाक़िआ़)

एक मरतबा का ज़िक्र है कि हिन्दुस्तान के एक बहुत बड़े आ़लिमे दीन और मुफ़्तिए इस्लाम जो अपने वक़्त के बहुत बड़े इमाम माने जाते थे, रेल्वे स्टेशन जाने के लिए रिक्शे में सुवार हुए कि इतने में एक परेशान ह़ाल शख़्स दौड़ता हुवा ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगा : हुज़ूर ! मैं फ़ुलां मुसीबत में मुब्तला हूं, तावीज़ अ़ता फ़रमा दीजिए। उन के साथ मौजूद साह़िब नाराज़ हो कर उस शख़्स से कहने लगे : गाड़ी का वक़्त हो चुका है और तुम अभी तावीज़ लेने आ गए ! गाड़ी छूट जाएगी ! दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और रह़म दिली का समुन्दर लिए वोह आ़लिमे दीन उन साह़िब से बेक़रार हो कर फ़रमाने लगे : "छूट जाने दो ! दूसरी ट्रेन से चला जाऊंगा। कल क़ियामत के दिन अगर अल्लाह पाक ने पूछ लिया कि तू ने मेरे फ़ुलां बन्दे की परेशानी में क्यूं मदद नहीं की ? तो मैं क्या जवाब दूंगा ?" येह फ़रमाते ही उन्हों ने

रिक्शे से अपना सारा सामान उतरवा लिया और उस शख़्स की मदद (यानी तावीज़ लिखने) में मसरूफ़ हो गए।

ऐ आशिक़ाने औलिया ! क्या आप जानते हैं वोह आ़लिमे दीन व मुफ़्तिए इस्लाम कौन थे ? वोह बुज़ुर्ग हस्ती इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के शहज़ादे हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान नूरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه थे, आप अपने वालिदे मोह़तरम की त़रह़ इ़ल्म, तक़्वा और ख़िदमते ख़ल्क़ में बे मिसाल थे।

मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत का आप का एक और वाक़िआ़ पढ़िए ! हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه 3 अप्रैल 1974 ई़, बुध के दिन "ज़ाकिरनगर जमशेदपुर" में किसी के यहां क़ियाम फ़रमा थे, रात जल्से की वजह से काफ़ी ताख़ीर हो गई, फ़ज्र से पहले बहुत थोड़ा वक़्त आराम करने को मिला, इस लिए बाद नमाज़े फ़ज्र औरादो वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो कर आंखों में सुर्मा लगा कर सोने का इरादा फ़रमाया, इतने में जो लोग मौजूद थे उन को कोई साह़िब हटाने लगे। हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उन से फ़रमाया : उन लोगों से पूछ लें, शायद उन को कोई ह़ाजत हो, गोया आप ने उसे ना पसन्द फ़रमाया कि उन को हटाया जाए और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का हमेशा येही मामूल था कि तमाम लोगों की ज़रूरिय्यात पूरी फ़रमाने के बाद आराम फ़रमाते, हां ख़ुद से लोग ख़याल करते हुए उठ कर चले जाएं तो दूसरी बात है। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "**हटो ! ह़ज़रत को आराम करने दो, आप लोग जाएं ह़ज़रत सोएंगे, आप लोग आराम करने दें**" इस क़िस्म के जुम्लों से नाराज़ होते थे कि शायद किसी का दिल न टूट जाए या किसी की कोई अहम ज़रूरत पूरी होने से रह जाए। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 903)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

मुसलमान भाई की मदद करने की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसलमान की दुन्यवी तक्लीफ़ दूर की तो क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उस की उख़रवी तक्लीफ़ को दूर फ़रमाएगा। अल्लाह पाक उस वक़्त तक बन्दे की मदद फ़रमाता रहता है, जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है।" (مسلم شریف، ص1110،حدیث:6853ملتقطاً)

मुफ़्तिए आज़म से हम को प्यार है إِنْ شَآءَ الله अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علىٰ مُحَمَّد

पैदाइशी वली

जब इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के हां आप के छोटे शहज़ादे मुफ़्तिए आज़मे हिन्द मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) की विलादत 22 ज़िल ह़ज शरीफ़ 1310 हिजरी, मुत़ाबिक़ 7 जुलाई 1893 ई, जुमुआ के दिन सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त बरेली शरीफ़ (यूपी, हिन्द) में हुई तो आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) उस वक़्त दरे मुर्शिद मारेहरा शरीफ़ में ह़ाज़िर थे। ह़ज़रत सय्यिद शाह अबुल ह़ुसैन अह़मद नूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने बाद नमाज़े फ़ज्र मुसल्ले पर बैठे बैठे आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को आप के होने वाले शहज़ादे और मुस्तक़बिल के मुफ़्तिए आज़म के लिए अपना जुब्बा व इ़मामा देते हुए इरशाद फ़रमाया : "मेरी येह अमानत आप के ह़वाले है, जब वोह बच्चा इस का मुतह़म्मिल हो जाए तो उसे दे दें।" फिर ह़ज़रते अबुल ह़ुसैन नूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने आप को बेटे के पैदा होने की मुबारकबाद देते हुए फ़रमाया : आप बरेली तशरीफ़े ले जाएं। (मुफ़्तिए आज़मे हिन्द और उन के ख़ुलफ़ा, स. 20, 21, 22, 23)

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की विलादत से पहले आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने येह दुआ मांगी : **"ऐ मालिके बे नियाज़, ऐ रब्बे करीम ! मुझे ऐसी औलाद अ़ता फ़रमा जो अ़र्सए दराज़ तक तेरे दीन और तेरे बन्दों की ख़िदमत करे।"** अल्लाह पाक ने मुफ़्तिए आज़म رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की सूरत में दुआ क़बूल फ़रमाई। (मुफ़्तिए आज़मे हिन्द और उन के ख़ुलफ़ा, स. 19)

छे माह बाद ह़ज़रते अबुल हुसैन नूरी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه बरेली तशरीफ़ लाए तो शहज़ादए आला ह़ज़रत को आप की गोद में डाल दिया गया। आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने अपना लुआ़बे दहन (यानी थूक मुबारक) शहादत की उंगली से नौ मौलूद के दहन (यानी मुंह) में डाल कर देर तक दुआ़ओं से नवाज़ते रहे। 25 जुमादल आख़िरा 1310 हिजरी को छे माह तीन दिन की उ़म्र में ह़ज़रते शाह अबुल हुसैन नूरी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने दाख़िले सिल्सिला फ़रमाया और (इसी नन्ही सी उ़म्र शरीफ़ में अपने) तमाम सलासिल की इजाज़तो ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया :

"येह बच्चा बड़ा हो कर दीनो मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मख़्लूक़े ख़ुदा को उस की ज़ात से बड़ा फ़ैज़ पहुंचेगा। येह बच्चा वली है, येह फ़ैज़ का दरिया है, इस की निगाहों से लाखों गुमराह इन्सान दीने ह़क़ पर क़ाइम होंगे।" (मुफ़्तिए आज़मे हिन्द और उन के ख़ुलफ़ा, स. 25 – तारीख़े मशाइ़ख़े क़ादिरिय्या, 2/447 मुलख़्ख़सन – जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 183 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का पैदाइशी और अस्ली नाम "मुह़म्मद" है, वालिदे मोह़तरम आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने पुकारने के लिए "**मुस्त़फ़ा रज़ा**" रखा, येह नाम इस क़दर मश्हूर हुवा कि अब आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को इसी नाम से याद किया जाता है। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 102 ब तग़य्युरे क़लील)

आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का तख़ल्लुस "**नूरी**" है। (शाइ़र का मुख़्तसर नाम जिसे वोह अपने अश्आ़र में अस्ल नाम की जगह इस्तिमाल करता है उसे तख़ल्लुस कहते हैं।)

मुफ़्तिए आज़म रज़ा का लाडला और मुहिब्बे सय्यिदे अबरार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द और वालिदे मोहतरम

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने अपने छोटे शहज़ादे हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को बड़े नाज़ों से पाला। जिस वक़्त आप की विलादत हुई उस वक़्त आला हज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की उम्र मुबारक 38 साल थी। हुज़ूरे मुफ़्तिए आज़मे हिन्द ने अपने वालिदे मोहतरम से कमो बेश 30 साल फ़ैज़ पाया।

मेरे प्यारे प्यारे दादा मुर्शिद, सय्यिदी क़ुत्बे मदीना ज़ियाउद्दीन मदनी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : जब आला हज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه दारुल इफ़्ता में होते तो कभी कभी आप के छोटे शहज़ादे (मुफ़्तिए आज़मे हिन्द) आप की ख़िदमत में हाज़िर होते, बारगाहे रज़ा में शहज़ादए रज़ा की हाज़िरी का इतना प्यारा अन्दाज़ होता कि क़ुरबान होने को जी चाहता जो भी देखता पुकार उठता कि बिलाशुबा येह मादरज़ाद (यानी पैदाइशी) वलिए कामिल हैं, इस के इलावा किसी और से ऐसे अन्दाज़ मुतवक़्क़ेअ नहीं हो सकते, उस वक़्त आप की उम्र चार साल के क़रीब थी, आप आहिस्ता से आते और बारगाहे रज़ा में दो ज़ानूं बा अदब बैठ जाते यानी शरारती बच्चों की तरह न हंगामा करते न सामान को उठाते फेंकते। इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को छोटे शहज़ादे की विलादत पर शागिर्दों और महब्बत करने वालों ने मुबारकबादें पेश कीं तो आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह पाक ! आप की ज़बान मुबारक करे मैं तो दीन का अदना ख़ादिम हूं और मेरी दिली तमन्ना है कि मेरा बेटा भी दीन की ख़िदमत को ही अपना शिआर बनाए।**"

(जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 64)

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का बचपन शरीफ़

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की उ़म्र शरीफ़ जब चार साल चार माह और चार दिन हुई तो ख़ुद इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने रस्मे बिस्मिल्लाह फ़रमाई और फिर अपने बड़े शहज़ादे हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को आप की तालीम व निगहदाश्त (यानी निगरानी) के लिए ख़ास त़ौर पर मुक़र्रर फ़रमाया। जब आप की रस्मे बिस्मिल्लाह अदा हुई आप उस वक़्त नमाज़ और वुज़ू के मसाइल सीख चुके थे। मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का तीन साल में नाज़िरा क़ुरआने करीम मुकम्मल हुवा। आप की मुकम्मल तालीम दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम (सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के बरेली शरीफ़ में वाक़ेअ़ मद्रसे) में हुई। आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه औरादो वज़ाइफ़ और तिलावते क़ुरआने करीम के बचपन से ही पाबन्द थे कभी किसी को नमाज़ के लिए कहने की ज़रूरत न पड़ी। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 65 मुल्तक़त़न)

पहला फ़त्वा

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه 18 साल की उ़म्र में (बा क़ाइ़दा दीनी तालीम से) फ़ारिग़ुत्तह़सील हुए। आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने भी अपने वालिदे मोह़तरम की त़रह़ पहला फ़त्वा "**रज़ाअ़त** (यानी बच्चों के दूध पीने) **के मस्अला**" पर लिखा। आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने जवाब सह़ीह़ होने पर बहुत ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया। आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के पहले फ़त्वे पर जो ख़ुशी आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को हुई थी वैसी ही ख़ुशी अपने शहज़ादे, ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के फ़त्वे से आप को हुई और आप ने ख़ुद "मुहर" (Stamp) बना कर अ़त़ा फ़रमाई।

(जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 65 मुल्तक़त़न)

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ पहले फ़त्वे का दिलचस्प वाक़िआ कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं : आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ के फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की हाथ से लिखी हुई एक जिल्द बैठक में रखी रहती थी। आला ह़ज़रत कुछ मसाइल वहां ह़ाज़िर रहने वाले उ़लमा को लिखने के लिए अ़त़ा फ़रमाते और वोह ह़ज़रात मुतअ़ल्लिक़ा ह़ुक्म देख कर जवाब लिख देते थे। एक रोज़ ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ बैठक में तशरीफ़ ले गए। वहां देखा कि एक साह़िब फ़तावा रज़विय्या देख रहे हैं और नीचे एक काग़ज़ रखा हुवा है। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने पूछा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : एक मस्अला लिखना है, मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ को (उन के साथ जो बे तकल्लुफ़ी थी उस के पेशे नज़र) उन से फ़रमाया : येह क्या कमाल है कि फ़तावा रज़विय्या से देख कर ह़ुक्म लिख दिया, ख़ुद फ़िक़्ह की किताबों से इस का ह़ुक्म देख कर लिखिए। उन्हों ने भी इसी अन्दाज़ में जवाब दिया : "**तो लीजिए ! आप ही लिखिए।**" मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने सुवाल लिया, येह रज़ाअ़त का कोई पेचीदा (यानी मुश्किल) मस्अला था (ख़ुद ह़ज़रत ने मस्अला मुझे बताया था मगर उस वक़्त याद नहीं आता) ह़ज़रते मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने वहां जो किताबें थी उन्हें देख कर उस का ह़ुक्म लिखा ताईद में इ़बारतें लिखीं और लिख कर आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की ख़िदमत में भिजवा दिया आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने ख़त़ पहचान लिया, पूछा : किस ने दिया है ? ले जाने वाले ने बताया : छोटे मियां ने (घर में मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ को छोटे मियां कहते थे) आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने उन्हें त़लब फ़रमाया : मुफ़्तिए आज़म ह़ाज़िर हुए देखा कि आला ह़ज़रत बाग़ बाग़ हैं, पेशानिए अक़्दस पर बशाशत से किरनें फूट रही हैं। फ़रमाया : इस पर दस्तख़त़ करो। दस्तख़त़ करवाने के बाद आला ह़ज़रत ने **"अल जवाब सह़ीह़"** या इस जैसा कोई और जुम्ला लिख कर अपने दस्तख़त़ फ़रमाए और पांच रुपै

इन्आ़म अ़ता करते हुए फ़रमाया : तुम्हारी **"मोहर"** बनवा देता हूं। अब फ़तावा लिखा करो, आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने अपने दस्ते मुबारक से "मोहर" का ख़ाका तय्यार फ़रमाया, कुन्यत और लक़ब लिख कर मोहर बनाने वाले के ह़वाले किया, जब मोहर बन के आ गई तो बुला कर अ़ता फ़रमाई।

ख़ास बात येह है कि आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने इस पहले फ़त्वे पर एक लफ़्ज़ घटाया न बढ़ाया न कोई इस्लाह़ की। मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का पहला फ़त्वा ऐसा सह़ीह़ और मुकम्मल था कि कहीं इस में उंगली रखने की जगह न थी। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 252)

जब आग़ाज़ का येह आ़लम है तो अन्जाम का आ़लम क्या होगा !

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه 1328 से 1340 हिजरी (12 साल) तक अपने वालिदे माजिद इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की ज़ेरे निगरानी फ़त्वा लिखते रहे फिर जब आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का इन्तिक़ाले पुर मलाल हुवा तो बाक़ाइ़दा त़ौर पर फ़तावा जारी फ़रमाए। (जहाने मुफ़्तिए आज़मे, स. 65 मुल्तक़त़न)

आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के फ़तावा का मजमूआ़ 7 जिल्दों पर मुश्तमिल "फ़तावा मुफ़्तिए आज़म" के नाम से मौजूद है। आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के पास अ़रब शरीफ़, अफ़्रीक़ा, मॉरीशस, इंगलैंड, अमेरीका और मलेशिया वग़ैरा से दीनी मसाइल के ख़ुतूत आते और आप उन के जवाबात इरशाद फ़रमाते।

आ़लिम व मुफ़्ती, फ़क़ीहे बे बदल ख़ूब ख़ुश अख़्लाक़ व बा किरदार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

काग़ज़ का अदब

ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आला ह़ज़रत, सय्यिदुना व मौलाना अलह़ाज मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه अल मारूफ़ "**ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द**" सादा काग़ज़ात और ह़ुरूफ़े मुफ़रदा (यानी अलग अलग लिखे हुए

हुरूफ़ मसलन अलिफ़, बा, ता वग़ैरा) की भी ताज़ीम करते थे क्यूंकि वोह क़ुरआनो ह़दीस और शरीअ़त की बातें लिखने में काम आते हैं। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ 1391 हिजरी को दारुल उ़लूम रब्बानिय्या, बांदा (हिन्द) के सालाना जल्सए दस्तारबन्दी में तशरीफ़ लाए तो सुवारी से उतर कर चन्द ही क़दम चले थे कि आप की नज़र उर्दू लिखाई वाले काग़ज़ के चन्द पुराने टुकड़ों पर पड़ी, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़ौरन उन को ज़मीन से उठाया और फ़रमाया : काग़ज़ात और अ़रबी हुरूफ़ (कि उर्दू के भी चन्द के इ़लावा सभी हुरूफ़ अ़रबी हैं उन) का एह़तिराम करना चाहिए इस लिए कि इन से क़ुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीसे मुक़द्दसा और तफ़ासीर वग़ैरा मुरत्तब होती हैं।

(मुफ़्तिए आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 124 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

काश ! मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के सदक़े हमें भी मुक़द्दस औराक़ का अदब नसीब हो जाए। लिखाई किसी भी ज़बान में हो उस पर पांव न रखिए। ऐसे पायदान (DOORMATE) दरवाज़े के बाहर न रखें जिन पर "WELCOME" लिखा होता है। जो ख़ुश नसीब मुसलमान तह़रीरों का अदब करते हुए अख़बारात व मुक़द्दस काग़ज़ात और गत्ते वग़ैरा ज़मीन पर देख कर उठा लेते और उन को बीच समुन्दर या गहरे दरिया में ठन्डा कर देते हैं वोह क़ाबिले रश्क हैं और ज़मीन से मुक़द्दस काग़ज़ उठाने वाले ख़ुश नसीबों के लिए ख़ुशख़बरी है कि

मुतबर्रक काग़ज़ उठाने की फ़ज़ीलत

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबियों के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो कोई ज़मीन से ऐसा काग़ज़ उठाए जिस में अल्लाह पाक के नामों में से कोई नाम हो तो अल्लाह पाक उस (उठाने वाले) का नाम (रूह़ों के सब से आला मक़ाम)

इल्लिय्यीन में बुलन्द फ़रमाएगा और उस के वालिदैन के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (यानी कमी) करेगा अगर्चे उस के वालिदैन ग़ैर मुस्लिम ही क्यूं न हों।

(مجمع الزوائد، 4/300، حدیث:6846 مختصراً)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الکریم ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी अल्लाह पाक और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, तमाम सह़ाबा व अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم की मह़ब्बत और इन के अदब व फ़ैज़ान को आ़म करने वाली तन्ज़ीम है। दावते इस्लामी के एक शोबे का नाम "शोबए तह़फ़्फ़ुज़े औराक़े मुक़द्दसा" है जिस का काम गली, मह़ल्ले, मसाजिद वग़ैरा में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के बॉक्स और ड्रम वग़ैरा रख कर मुक़द्दस औराक़ को जमा कर के फिर मुफ़्तियाने किराम की दी गई रहनुमाई के मुत़ाबिक़ ठन्डा करना है।

मुफ़्तिए आ़ज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पीरे कामिल

ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती ग़ुलाम मुह़म्मद ख़ान साह़िब (शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ अमजदिया नागपुर) 1953 ई़ से पहले किसी से मुरीद नहीं हुए थे, किसी भी सिल्सिले में वाबस्ता होने के लिए बेचैन थे। एक दिन ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुर्रशीद साह़िब (बानिए जामिअ़ए अमजदिया नागपुर) से पूछा : हुज़ूर ! किस से मुरीद होना चाहिए ? तो ह़ज़रत ने इरशाद फ़रमाया : मौलाना ! अब कहां ऐसे लोग रह गए हैं, जो शरीअ़तो त़रीक़त में कामिल हों सिवाए मुफ़्तिए आज़मे हिन्द के।

(मुफ़्तिए आज़मे हिन्द नम्बर, माहनामा इस्तिक़ामत, स. 558)

मुफ़्तिए आ़ज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ख़ुसूसिय्यात

हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के चचाजान मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का 1329 हिजरी को इन्तिक़ाल हुवा तो आप के बड़े भाई मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मद्रसा मन्ज़रे इस्लाम के मोहतमिम (PRINCIPAL) बने तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़तावा लिखते और तदरीस फ़रमाते। आप को कभी किसी ने

क़हक़हा लगाते नहीं देखा। हर काम या चीज़ के लेने देने का सीधे हाथ से एहतिमाम फ़रमाते, कुतुबे ह़दीस पर दूसरी किताबें नहीं रखते। ज़िक्रे मीलादे पाक या मह़फ़िले नात व मन्क़बत में ख़त्म होने तक बा अदब बैठे रहते थे, बीमारों की इ़यादत को तशरीफ़ ले जाते, उ़लमाए किराम का ह़द दर्जा एह़तिराम करते, सादाते किराम का इस अन्दाज़ से एह़तिराम करते जैसे कोई रिआ़या (यानी अ़वाम) अपने बादशाह का एह़तिराम करती है। दाढ़ी रखने और इस्लामी लिबास पहनने की तल्क़ीन करते थे।

(जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 65, तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 554)

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द की इ़मामा शरीफ़ से मह़ब्बत

ह़ज़रते मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक साल दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ के सालाना जल्सए दस्तारे फ़ज़ीलत के मौक़े पर तशरीफ़ लाए तो "फ़ैज़ुर्रसूल" के असातिज़ा ने ह़ज़रते मुफ़्तिए आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से दर्से ह़दीस ले कर इजाज़ते ह़दीस लेने का फ़ैसला किया। ह़ज़रते मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की इजाज़त से दर्से ह़दीस की एक नूरानी मह़फ़िल मुन्अ़क़िद हुई। दर्से ह़दीस की इस मह़फ़िल के शुरका पर लाज़िम क़रार दिया गया कि वोह इ़मामा शरीफ़ बांध कर ही शरीक हों, चुनान्चे दारुल उ़लूम के सारे असातिज़ए दर्से ह़दीस की इस मजलिस में इ़मामा बांध कर शरीक हुए। (मुफ़्तिए आज़म और उन के ख़ुलफ़ा, 1/44 बितसर्रुफ़िन)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सुन्नते रसूल इ़मामा शरीफ़ से मह़ब्बत देखी, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की इ़मामा शरीफ़ से मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप ने जिन जिन उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम को ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई उन में से अक्सर को ख़ुद अपने हाथों से इ़मामा शरीफ़ बांधा, बहुतों को जुब्बा व दस्तार और टोपी भी अ़ता की। (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 509)

आप का अपना अन्दाज़ मुबारक येह था कि बड़े अ़र्ज़ का ज़ियादा तर सफ़ेद, बादामी इ़मामा (शरीफ़) बांधते। ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान आज़मी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه सादा इ़मामा बांधते थे मगर आप के सर मुबारक पर इ़मामा इतना ख़ूबसूरत मालूम होता कि देखने वाले कहते कि इ़मामे की वज़्अ़ (यानी बनावट) इन्हीं के सर मुबारक के लिए हुई है। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 243 मुलख़्ख़सन)

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द का इ़मामा अमीरे अहले सुन्नत के सर पर

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : दावते इस्लामी के बनने से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मद शाह दूल्हा बुख़ारी सब्ज़वारी** رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के मज़ार शरीफ़ वाली ह़ैदरी मस्जिद में आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के ख़लीफ़ा, मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रते मौलाना जमीलुर्रह़मान क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के शहज़ादे ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़मीदुर्रह़मान क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه इमामत फ़रमाते थे, आप का घर मस्जिद से तक़रीबन छे सात किलो मीटर दूर था, आप के पास ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का बा बरकत **इ़मामा शरीफ़ था। फ़ज्र की नमाज़ में आप की तशरीफ़ आवरी न होने के सबब** फ़ज्र की इमामत की मुझे सआ़दत मिलती थी और उन का ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه वाला इ़मामा शरीफ़ मुझे नसीब हो जाता, जिस से मैं बरकतें ह़ासिल किया करता। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! एक वलिए कामिल का इ़मामा शरीफ़ बारहा मेरे हाथों और सर से मस हुवा है। اِنْ شَآءَاللّٰه मेरे हाथों और सर को जहन्नम की आग नहीं छूएगी और जब हाथों और सर को न छूएगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه सारा ही बदन म़ह़फ़ूज़ रहेगा। अमीरे अहले सुन्नत मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की बारगाह में आ़जिज़ी करते हुए अ़र्ज़ करते हैं :

मुफ़्तिए आज़म बड़ी सरकार है जबकि अदना सा गदा अ़त्तार है
اِنْ شَآءَاللّٰه मग़्फ़िरत हो जाएगी ऐ वली ! तेरी दुआ़ दरकार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 589, 590)

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه की शादी ख़ाना आबादी

आप رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه की शादी ख़ाना आबादी अपने चचा मुहम्मद रज़ा ख़ान साहिब के हां हुई और अल्लाह पाक ने आप को सात बच्चों की नेमत से नवाज़ा, जिन में से एक बेटा और बक़िय्या सब बेटियां थीं। आप رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه के बेटे अन्वर रज़ा (कम उ़म्री) में इन्तिक़ाल कर गए। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 65 मुल्तक़तन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द हुक्मरानों से दूर रहते थे

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه वुज़रा और हुकूमती अरकान से हमेशा दूर रहा करते थे चुनान्चे रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه लिखते हैं : और येह भी दीनी ग़ैरत ही का एक बे मिसाल नमूना है कि (सरकारे मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه) बानवे साल की त़वील ज़िन्दगी में कभी किसी सरबराहे मम्लकत के घर गए और न किसी बड़े से बड़े फ़रमां रवा (यानी हुक्मरान) के बंगले में नज़र आए बल्कि ह़ैरत में डूब जाने की बात येह है कि मम्लकतों के कितने ही सरबराहों और वक़्त के कितने ही सलात़ीन ने ख़ुद उन की मजलिस में बारयाब (यानी ह़ाज़िर) होने की इजाज़त चाही और मुफ़्तिए आज़म (رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه) ने येह कह कर मिलने से इन्कार कर दिया कि एक दरवेश का बादशाहों और अरबाबे हुकूमत से सरोकार ही क्या है ? (मुफ़्तिए आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 110) गोया मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه अपने वालिदे माजिद के इस शेर के मिस्दाक़ थे :

करूं मदहे दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला   मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन पारए नां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश,स. 109)

शर्हे कलामे रज़ा : आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के कलाम के इस मक़्त़अ़ का मत़लब है, ऐ रज़ा ! मैं और दौलतमन्दों, दुनिया के नवाबों और हुक्मरानों की तारीफ़ व ख़ुशामद करूं ? नहीं ! नहीं ! इस बला यानी मालदारों की ख़ुशामद नुमा आफ़त व बला में तो बस "मेरी बला" ही पड़े ! (यानी मुझ से तो ऐसा हो ही नहीं सकता) बस मैं तो अपने रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार का भिकारी हूं, मेरा दीन "रोटी का टुकड़ा" नहीं (कि जिधर "माल" देखा उधर लुढ़क गए !)

सोने की अंगूठी मर्द को ह़राम है

ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : शहज़ादए आला ह़ज़रत, हु़ज़ूर मुफ़्तिए आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के लिए सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देह वोह मन्ज़र होता था जब आप किसी मुसलमान को इस्लामी शरीअ़त की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए पाते थे, اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَ نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (यानी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मना करने) का फ़र्ज़ अदा करते वक़्त आप छोटे बड़े, अमीरो ग़रीब और ह़ाकिम व मह़कूम के दरमियान कोई इम्तियाज़ (यानी फ़र्क़) नहीं करते थे। उन के दरबार का आ़म मामूल था कि कोई बड़े से बड़ा रईस (यानी मालदार) हो या ऊंचे से ऊंचे मन्सब का अफ़्सर, उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते वक़्त अगर उस की उंगली में सोने की अंगूठी होती तो वोह फ़ौरन उतरवा देते और निहायत शफ़्क़त और मह़ब्बत के साथ उसे तल्क़ीन फ़रमाते कि शरीअ़ते मुह़म्मदी में मर्दों के लिए सोने का इस्तिमाल ह़राम है। फिर दिल का किश्वर (यानी दिल का मुल्क) फ़त्ह़ कर लेने वाले लहजे में इरशाद फ़रमाते : "**कोई गुनाह लम्ह़े दो लम्ह़े या घन्टे दो घन्टे का होता है लेकिन सोने की अंगूठी का गुनाह ऐसा गुनाह है कि जब तक**

पहने रहो मुसल्सल गुनाह ही गुनाह है ।" (मुफ़्तिए आज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 146) (अंगूठी के बारे में तफ़्सीली दीनी मसाइल जानने के लिए अमीरे अहले सुन्नत की किताब 550 सुन्नतें और आदाब पढ़िए।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

काश ! मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सदक़े हम भी नेकी की दावत देने और बुराई से मना करने वाले बन जाएं, अगर आप किसी को नेकी की दावत देंगे तो एक एक कलिमे के बदले एक एक साल की इ़बादत का सवाब पाएंगे जैसा कि इमाम अबू ह़ामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : या अल्लाह पाक ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : मैं उस के हर कलिमे के बदले एक एक साल की इ़बादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है। (مکاشفۃ القلوب، ص48)

سُبْحَانَ اللهِ ! प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकियों के ह़रीस बन जाइए, दूसरों को नमाज़ी बनाने की मुहिम तेज़ से तेज़ तर कर दीजिए, जब भी नमाज़े बा जमाअ़त के लिए मस्जिद की त़रफ़ जाने लगें, दूसरों को तरग़ीब दे कर साथ लेते जाइए, जिन्हें नमाज़ नहीं आती उन्हें नमाज़ सिखाइए। अगर आप के सबब एक भी नमाज़ी बन गया तो जब तक वोह नमाज़ें पढ़ता रहेगा उस की हर हर नमाज़ का आप को भी सवाब मिलता रहेगा । दावते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में दाख़िला ले लीजिए, इस में ख़ुद भी क़ुरआने करीम सीखिए और दूसरों को भी सिखाइए। आप से सीखने वाला जब जब तिलावत करेगा आप को भी उस की तिलावत का सवाब मिलता रहेगा। आप भी सुन्नतों पर अ़मल कीजिए और दूसरों को भी अ़मल पर आमादा कीजिए। अगर आप ने किसी को एक सुन्नत

सिखा दी तो अब वोह जब जब उस सुन्नत पर अ़मल करेगा आप को भी उस सुन्नत पर अ़मल करने वाले की त़रह़ सवाब मिलता रहेगा। अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दावत और क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की ज़ोरदार मुहिम चला कर मुसलमानों को "नेक" बनाने की "मशीन" बन जाइए, اِنْ شَآءَاللہ सवाब का अम्बार लग जाएगा और दोनों जहानों में बेड़ा पार हो जाएगा। नेकी की दावत का आख़िरत में मिलने वाला सवाब बन्दा अगर दुनिया ही में देख ले तो कोई लम्ह़ा बेकार न जाने दे, हर वक़्त ही नेकी की दावत की धूमें मचाता रहे।

मैं नेकी की दावत की धूमें मचाऊं तू कर ऐसा जज़्बा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"मुस्त़फ़ा" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से मुफ़्तिए आज़म के पांच वाक़िआ़त

﴾1﴿ बयान रुकवा कर तौबा करवाई

कहा जाता है : एक बार किसी जल्से में शहज़ादए आला ह़ज़रत हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ स्टेज पर तशरीफ़ फ़रमा थे। एक शोला बयान मुक़र्रिर ने ख़ुफ़िया पुलिस को मुख़ात़ब करते हुए जोशे ख़ित़ाबत में कह दिया : "**अगर ह़ुकूमत के किरामन कातिबीन मौजूद हैं तो लिख लें कि...**" येह सुनते ही हुज़ूर मुफ़्तिए आज़म رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने फ़ौरन उस को टोका और तौबा का ह़ुक्म दिया। इस पर उस मुक़र्रिर ने फ़ौरन बयान रोक कर अ़लल एलान तौबा की।

(कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 300)

अल्लाह पाक की मुफ़्तिए आज़मे हिन्द पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर मुफ़्तिए आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के टोकने का सबब येह था कि मुक़र्रिर ने गवर्नमेंट की "ख़ुफ़िया पुलिस" को مَعَاذَاللهِ ! किरामन कातिबीन (यानी बन्दों के आमाल लिखने वाले बुज़ुर्ग और मासूम फ़िरिश्तों) जैसा कह दिया था !

पैकरे रुश्दो हिदायत मुफ़्तिए आज़म की ज़ात आमिले क़ुरआनो सुन्नत मुफ़्तिए आज़म की ज़ात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾2﴿ बात मान लेते

ह़ज़रते मौलाना ह़फ़ीज़ुर्रह़मान साह़िब मर्ह़ूम का बयान है : एक मरतबा मैं अपने क़रीब तरीन अ़ज़ीज़ के साथ मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मुलाक़ात के लिए ह़ाज़िर हुवा, मुलाक़ात के बाद ह़ज़रत ने मेहमान नवाज़ी के लिए इसरार किया तो हम रुक गए। इसी दौरान शाहजहांपुर से चन्द अ़क़ीदतमन्द ह़ाज़िर हुए, ह़ज़रत की दस्तबोसी कर के बैठ गए और फिर फ़ौरी त़ौर पर जाने लगे। ह़ज़रत ने उन ह़ज़रात को रोकने की त़रफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाई लेकिन वोह लोग नहीं रुके और स्टेशन की त़रफ़ रवाना हो गए। उन को ट्रेन नहीं मिली, इस के बाद बस स्टैन्ड की त़रफ़ रवाना हुए तो वहां पर उन को बस भी नहीं मिली। मैनेजर बस स्टैन्ड ने बताया कि शाहजहांपुर को अब कोई बस नहीं जाएगी, सुब्ह़ को जाएगी। दिल बरदाश्ता हो कर ह़ज़रत के आस्तानए आ़लिया (यानी घर मुबारक) की त़रफ़ रवाना हो गए, ह़ज़रत ने उन लोगों के जाने के बाद मौलाना ह़फ़ीज़ुर्रह़मान साह़िब से फ़रमाया कि येह सब ह़ज़रात थोड़ी देर बाद वापस आ जाएंगे, उन को न बस न ट्रेन मिलेगी। थोड़ी देर बाद काफ़ी परेशानी उठा कर थक कर दोबारा ह़ज़रत के आस्ताने पर आ गए, उन को देख कर मौलाना साह़िब मुस्कुराने लगे, हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द ने भी तबस्सुम फ़रमाया और सब लोगों के साथ बैठ कर खाना खाया। (जहाने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, स. 912 तस्हीलन)

अल्लाह पाक की मुफ़्तिए आज़मे हिन्द पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ ख़ादिमा की तक्लीफ़ का ख़याल

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के बयान का ख़ुलासा है कि मैं जब मुफ़्तिए आज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर हुवा तो आप ने दारुल इफ़्ता की ख़िदमत मेरे सिपुर्द फ़रमा दी। मैं दिन में मसाइल का जवाब लिखता और इ़शा के बाद आप को सुनाया करता और जहां मुनासिब मालूम होता आप इस्लाह़ फ़रमाया करते थे, येह मजलिस उ़मूमन दो तीन घन्टे की होती जबकि बसा औक़ात चार घन्टे की भी हो जाती थी। इन्ही दिनों में एक दफ़ा जब कि सख़्त सर्दियों के दिन थे, कमरे में ह़ज़रत के लिए अंगेठी थी जो कुछ देर के बाद ठन्डी होने लगी। अचानक आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : अगर कोयला और होता तो अंगेठी ही गर्म हो जाती। मैं ने अ़र्ज़ की : अन्दर ख़ादिमा को आवाज़ दे कर कोयला मांग लूं ? फ़रमाया : दिन भर की थकी हारी बेचारी सो गई होगी, जाने दीजिए। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 328 मुल्तक़त़न)

अल्लाह पाक की मुफ़्तिए आज़मे हिन्द पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿4﴾ मुफ़्तिए आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने इस्लाह़ फ़रमाई

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ग़ुलाम आसी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने नाम के शुरूअ़ में बरकत के लिए लफ़्ज़ "मुह़म्मद" शामिल कर लिया था। इस पर शहज़ादए आला ह़ज़रत मुफ़्तिए आज़म मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने तम्बीह फ़रमाई कि यहां इस्मे रिसालत (यानी मुहम्मद) नहीं होना चाहिए। मैं ने फ़ौरन अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर फिर "मुहम्मद अ़ब्दुल ह़य्य" का क्या हुक्म होगा ? इस के जवाब में ह़ज़रत ने फ़रमाया : कुजा अ़ब्दुल ह़य्य व कुजा ग़ुलाम आसी (यानी कहां अ़ब्दुल ह़य्य और कहां ग़ुलाम आसी) ? अ़ल्लामा फ़रमाते हैं : "येह जवाब सुन कर मैं ह़ैरान रह गया और ह़ज़रत के تَفَقُّہُ فِی الدِّیْن (यानी दीनी मसाइल की मालूमात) की अ़ज़मत दिल में ख़ूब ख़ूब रच बस गई।"

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने इरशाद से येह रहनुमाई फ़रमाई है कि जिस नाम के शुरूअ़ में लफ़्ज़ "मुह़म्मद" लाया जाए, अगर उस नाम का इ़त्लाक़ लफ़्ज़ "मुह़म्मद" पर दुरुस्त हो तो वहां लफ़्ज़ "मुह़म्मद" लाना दुरुस्त होगा (जैसे मुह़म्मद सादिक़) और अगर नाम का इ़त्लाक़ लफ़्ज़ "मुह़म्मद" पर दुरुस्त न हो तो वहां लफ़्ज़ "मुह़म्मद" शुरूअ़ में लाना दुरुस्त न होगा (जैसे मुह़म्मद ग़ुलाम हुसैन)। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ब्दुल ह़य्य हैं लिहाज़ा मुहम्मद अ़ब्दुल ह़य्य कहना दुरुस्त है (ह़य्य अल्लाह पाक का नाम है और इस का मत़लब है **"ज़िन्दा"**। अ़ब्दुल ह़य्य का मत़लब है अल्लाह पाक का बन्दा, यक़ीनन मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक के बन्दए ख़ास हैं) लेकिन ग़ुलाम आसी नहीं हैं, इस लिए "मुहम्मद ग़ुलाम आसी कहना ना मुनासिब है।" (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स.451)

अल्लाह पाक की मुफ़्तिए आज़मे हिन्द पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

नामे मुहम्मद कितना मीठा मीठा लगता है दोनों जहां सरकार का मुझ को सदक़ा लगता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मालूमाती फ़तवा

सुवाल : अ़ब्दुल क़ादिर, अ़ब्दुल क़दीर, अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरा नाम वाले अफ़राद को क़ादिर, क़दीर और रज़्ज़ाक़ कह कर पुकारना कैसा है ?

जवाब : शहज़ादए आला ह़ज़रत हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐसे नामों से लफ़्ज़ "अ़ब्द" अलग कर देना बहुत बुरा है और कभी नाजाइज़ व गुनाह होता है और कभी कुफ़्र के क़रीब तक भी पहुंचता है। किसी शख़्स को क़ादिर कहना जाइज़ है। इस सूरत में अ़ब्दुल क़ादिर को क़ादिर कह कर पुकारना बुरा है। मगर "क़दीर" अल्लाह पाक के इ़लावा किसी और को कहना जाइज़ नहीं जैसा कि बैज़ावी में है और अगर किसी का नाम अ़ब्दुल क़ुद्दूस, अ़ब्दुर्रह़मान, अ़ब्दुल क़य्यूम है तो उसे क़ुद्दूस, रह़मान, क़य्यूम कहना ऐसा ही है जैसे उसे (कि) जिस का नाम अ़ब्दुल्लाह हो (उस को) "अल्लाह" कहना बहुत सख़्त बात है। والعیاذُ باللہ। जिस का नाम अ़ब्दुल क़ादिर हो उसे भी अ़ब्दुल क़ादिर ही कहा जाए, जिस का अ़ब्दुल क़दीर उसे अ़ब्दुल क़दीर ही कहना ज़रूरी है। अ़ब्दुल क़ुद्दूस को अ़ब्दुल क़ुद्दूस, अ़ब्दुर्रह़मान को अ़ब्दुर्रह़मान, अ़ब्दुल क़य्यूम को अ़ब्दुल क़य्यूम, अ़ब्दुल्लाह को अ़ब्दुल्लाह ही कहना फ़र्ज़ है यहां "अ़ब्द" का ह़ज़्फ़ (यानी अलग करना) अशद दर्जा ह़राम व कुफ़्र होगा والعیاذُ باللہ। (फ़तावा मुस्त़फ़विया,स. 89, 90 तस्हीलन)

﴾5﴿ मुबालग़ा आराई से एह़तियात़

ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की ज़बाने मुबारक से हमेशा नपी तुली बात ही निकलती, आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه जब भी किसी के इन्तिक़ाल के बारे में सुनते तो फ़ौरन दुआ़ए मग़्फ़िरत के लिए हाथ उठा देते। आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की ख़िदमत में फ़ौत हो जाने वालों के मुतअ़ल्लिक़ कई ख़ुतूत पेश किए जाते। आप का ताज़ियत करने में मुबालग़ा आराई से बचने का शानदार वाक़िआ़ पढ़िए : एक मरतबा किसी के ताज़ियती ख़त़ का जवाब लिखना था, शहज़ादए आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने मुफ़्ती मुजीबुल इस्लाम साह़िब से फ़रमाया कि जवाब लिख दें, मैं दस्तख़त़ कर देता हूं। चुनान्चे मुफ़्ती साह़िब ने

जवाब लिखा कि "आप का ख़त मिला, साहिबज़ादे के इन्तिक़ाल की ख़बर पढ़ कर बहुत अफ़सोस हुवा।" हज़रत ने जवाब सुनने के बाद फ़ौरन फ़रमाया : "**बहुत अफ़सोस**" तो नहीं हुवा, हां अफ़सोस हुवा। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 319)

अल्लाह पाक की हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने रसूल ! येह थी वलियुल्लाह और सच्चे आशिक़े रसूल की लिखने बोलने में एहतियात ! हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ को वालिदे मोहतरम आला हज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के फ़ैज़ान से लिखने बोलने में एहतियात की तरबियत हासिल हुई थी, हुज़ूर आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ भी निहायत मोहतात अल्फ़ाज़ इस्तिमाल फ़रमाते। हमें भी मोहतात अल्फ़ाज़ बोलने की आदत बनानी चाहिए मसलन किसी के वालिद साहिब के इन्तिक़ाल पर इस तरह के अल्फ़ाज़ कहना कि मुझे आप के अब्बूजान के इन्तिक़ाल की ख़बर से सख़्त धचका लगा, बहुत सदमा हुवा, मैं बहुत उदास हो गया, मुझे सख़्त अफ़सोस है, येह तमाम जुम्ले भी क़ाबिले ग़ौर हैं अगर दिल की कैफ़ियत ऐसी न होने के बावुजूद किसी ने इरादतन इस तरह के जुम्ले कहे तो उस ने झूट बोला और गुनाहगार और अज़ाबे नार का हक़दार हुवा।

हूं गुनाहों के मरज़ से नीम जां दर्दे इस्यां की दवा दरकार है
ख़ूब ख़िदमत सुन्नतों की मैं करूं सय्यिदी तेरी दुआ दरकार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 589,590)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तीन ह़ज

सरकार मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ हज व ज़ियारते मदीना की

सआ़दत से तीन बार मुशर्रफ़ हुए। आख़िरी बार ह़ाज़िरी के मौक़ा पर आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने मक्कए पाक में उन उ़लमाए ह़रमैन से भी मुलाक़ात की जिन्हों ने आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه से उन के वक़्त में ह़रमैने त़य्यिबैन में मुलाक़ात की सआ़दत पाई थी। (जहाने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, स. 994, 995 मुल्तक़त़न) आप अपने एक कलाम में लिखते हैं :

ख़ुदा ख़ैर से लाए वोह दिन भी नूरी मदीने की गलियां बुहारा करूं मैं

(सामाने बख़्शिश, स. 153)

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه की नातिया शाइ़री

शहज़ादए आला ह़ज़रत, मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه को विरसे में नातिया शाइ़री से भी ख़ूब ह़िस्सा मिला। आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه ने ह़म्दे बारी तआ़ला और रसूले मक़्बूल صَلَّىاللهُعَلَيْهِوَاٰلِهٖوَسَلَّم की कई नातें और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِعَلَيْهِمْ की मनाक़िब लिखीं। आप के कलाम में शरई़ और फ़न्नी कोई कमी नहीं। ख़ुद अपनी एक रुबाई़ में फ़रमाते हैं :

गुलहाए सना से महकते हुए हार सुक़्मे शरई़ से हैं मुनज़्ज़ह अश्आ़र
दुश्मन की नज़र में येह न खटकें क्यूंकर हैं फूल मगर हैं चश्मे आदा में ख़ार

(सामाने बख़्शिश, स. 232)

आप رَحْمَةُاللهِعَلَيْه का नातिया दीवान बनाम "सामाने बख़्शिश" पढ़ने, सुनने और समझने से तआ़ल्लुक़ रखता है। मक्तबतुल मदीना ने भी इसे ख़ूबसूरत अन्दाज़ में प्रिन्ट किया है। दावते इस्लामी की वेबसाइट से येह दीवान फ़्री डाउनलॉड कर के पढ़ा जा सकता है।

विसाल शरीफ़

ह़ुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِعَلَيْه हमेशा मस्जिद में नमाज़ अदा करते थे मगर विसाल शरीफ़ से एक दिन पहले बुध के दिन ज़ोहर और अ़स्र के लिए

मस्जिद में न पहुंचे तो लोगों के दिल इस एहसास से धड़कने लगे कि आप की तबीअ़त ज़ियादा नासाज़ हो गई है। आख़िरी शब इ़शा की नमाज़ बिस्तर ही पर अदा फ़रमाई। इस के बाद सब पर दम किया और ख़ामोशी से आंखें बन्द कर के लेट गए ताकि मामूलात मुकम्मल कर लें। शबे जुमेरात निस्फ़ गुज़र गई तो आंखें खोल कर बड़े ज़ब्त से मग़्मूम चेहरों पर नज़र डाली और फिर बतौरे वसिय्यत फ़रमाया : "**सुन्नते मुस्तफ़ा पर हर हाल में अ़मल पैरा रहना कि येही राहे नजात व कामरानी है**" फिर कुछ देर के बाद फ़रमाया : "हर कड़े (यानी मुश्किल) वक़्त में "حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ" पढ़ते रहना। इन दो अहम वसिय्यतों के बाद सूरतुल मुल्क शरीफ़ की तिलावत फ़रमाई, इस के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ कर कलिमए तय्यिबा का विर्द करते करते विसाल फ़रमा गए। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ।"

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 571)

14 मुहर्रम शरीफ़ 1402 हिजरी मुताबिक़ 12 नवम्बर 1981 विसाल के वक़्त घड़ी पर एक बज कर 40 मिनट थे। ब वक़्ते विसाल बिस्तर पर शक्ले मुहम्मद (के अन्दाज़ से) लेटे हुए थे। (तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, 571, 572 माख़ूज़न)

ग़ुस्ल, नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन

बरोज़ जुमुआ 14 मुहर्रम शरीफ़ 1402 हिजरी, 13 नवम्बर 1981 सुब्ह 8 बजे ग़ुस्ल दिया गया। सरकारे कलां ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुख़्तार अशरफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (सज्जादा नशीन किछौछा शरीफ़) ने आप की नमाज़े जनाज़ा इस्लामिया इन्टर कॉलेज बरेली शरीफ़ (हिन्द) में पढ़ाई, जिस में लाखों मुसलमानों ने शिर्कत की और फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अपने वालिदे माजिद, इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बाएं पहलू में दफ़्न किया गया।

(मुफ़्तिए आज़मे हिन्द और उन के ख़ुलफ़ा, स. 102 मुल्तक़तन)

अल्लाह पाक की मुफ़्तिए आज़मे हिन्द पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के तख़ल्लुस "नूरी" के चार हुरूफ़ की निस्बत से चार उ़लमाए अहले सुन्नत के तअस्सुरात

﴾1﴿ हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत (ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) ने फ़रमाया : अपने शहर में किसी को इ़ज़्ज़त व मक़्बूलिय्यत नहीं मिलती लेकिन हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को अपने दियार (यानी शहर) में जो इ़ज़्ज़तो मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है, इस की मिसाल कहीं नहीं मिलती।

(मुफ़्तिए आज़मे हिन्द नम्बर, माहनामा इस्तिक़ामत, स. 559)

﴾2﴿ हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद ह़बीबुर्रह़मान रज़वी उड़ेसवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : इस दौर में उन (यानी हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) की हस्ती फ़क़ीदुल मिसाल (यानी बे मिसाल) है। ख़ुसूसिय्यत के साथ बाबे इफ़्ता में बल्कि रोज़ मर्रा की गुफ़्तगू में जिस क़दर मोह़तात़ और मौज़ूं (यानी मुनासिब) अल्फ़ाज़ और क़ुयूद इरशाद फ़रमाते हैं अहले इ़ल्म ही उन की मन्ज़िल से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं। (मुफ़्तिए आज़मे हिन्द नम्बर, माहनामा इस्तिक़ामत, स. 559)

﴾3﴿ ग़ज़ालिए दौरां ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद काज़िमी शाह साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सय्यिदी मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की शान इस ह़क़ीक़त से ज़ाहिर है कि इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के लख़्ते जिगर और सह़ीह़ जानशीन होने के साथ **"اَلْوَلَدُ سِرٌّ لِاَبِیْہ" (यानी बेटा वालिद का राज़ होता है)** के सच्चे मिस्दाक़ हैं।

(तारीख़े मशाइ़ख़े क़ादिरिय्या, स. 551)

﴾4﴿ ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, सय्यिदी क़ुत्बे मदीना ह़ज़रत शाह ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, मुफ़्तिए आज़म हैं, आला ह़ज़रत हैं। वोह दर्जए सिद्दीक़ियत पर फ़ाइज़ हैं।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, स. 552)

﴾5﴿ बानिए दावते इस्लामी, मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आला ह़ज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान नूरी रज़वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ के अ़ज़ीम फ़ाज़िल, उ़लूमो फ़ुनून के माहिर, मुफ़्तिए इस्लाम, जय्यिद आ़लिमे दीन, मुख़्तलिफ़ किताबों के मुसन्निफ़, शाइ़रे इस्लाम और मश्हूर शैख़े त़रीक़त थे। एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के शहज़ादे और वली इब्ने वली, आ़शिक़े रसूल इब्ने आ़शिक़े रसूल थे।

(मदनी मुज़ाकरा, 12 मुह़र्रम शरीफ़ 1440 हिजरी, 22 सितम्बर 2018। मदनी मुज़ाकरा 20 रमज़ानुल मुबारक (बाद नमाज़े अ़स्र) 1441 हिजरी, 14 मई 2020)

अमीरे अहले सुन्नत ने मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की शान में एक मन्क़बत लिखी है जो आप की नातिया किताब "वसाइले बख़्शिश" से देखी जा सकती है उस मन्क़बत के मक़्ते में आ़जिज़ी करते हुए लिखते हैं :

काश ! नूरी के सगों में हो शुमार　　येह तमन्नाए दिले अ़त्तार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 590)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025